Buzurgane Deen Ki Baaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 261
Weekly Booklet : 261

बुज़ुर्गाने दीन की बातें

सफ़्हात 20

बारगाहे इलाही में अपना मर्तबा
जानने का तरीक़ा 01
खुश नसीब कौन ? 03
बरकत खत्म कर देने वाली तीन चीज़ें 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **बुज़ुर्गाने दीन की बातें**
सिने त़बाअ़त : **1444** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**बुज़ुर्गाने दीन की बातें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बुज़ुर्गाने दीन की बातें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़्दीक तर वोह होगा जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। (ترمذی، 2/27، حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रामीने ह़ज़रते का 'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

❀ जो बन्दा **अल्लाह** पाक की ने'मत पर शुक्र अदा न करे और न ही आ़जिज़ी करे तो **अल्लाह** पाक उस बन्दे से उस का दुन्यवी नफ़्अ़ भी रोक देता है और उस के लिये जहन्नम का एक त़बक़ा खोल देता है, अब **अल्लाह** पाक चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे और चाहे तो मुआ़फ़ कर दे। (احیاء العلوم، 3/419)

❀ किताबुल्लाह में तीन चीज़ें ऐसी हैं जो बड़ी अ़ज़मत वाली हैं, जिस ने उन की ह़िफ़ाज़त की वोह **अल्लाह** पाक का ह़क़ीक़ी बन्दा है और जिस ने उन्हें ज़ाएअ़ किया वोह उस का ह़क़ीक़ी दुश्मन है : ﴿1﴾ नमाज़ ﴿2﴾ रोज़ा और ﴿3﴾ ग़ुस्ले जनाबत। (حلیۃ الاولیاء، 2/286، رقم:2248)

फ़रामीने ह़ज़रते मैमून बिन मेह़रान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

❀ ऐ़ब निकालने वाले बद तरीन लोग होते हैं। (حلیۃ الاولیاء، 4/95، رقم:4872)

❀ जो बारगाहे इलाही में अपना मर्तबा जानना चाहे वोह अपने आ'माल में

ग़ौर करे क्यूं कि जैसे उस के आ'माल हैं वैसा ही उस का मर्तबा होगा।

(حلیۃ الاولیاء، 4/87، رقم:4829)

❀ आ़लिम और जाहिल दोनों से बह़्सो मुबाह़सा न करो क्यूं कि अगर आ़लिम से करोगे तो वोह अपना इ़ल्म तुम से रोक लेगा और जाहिल से करोगे तो वोह तुम पर ग़ुस्सा होगा। (تاریخ بن عساکر، 364/61)

❀ जो क़ुरआने पाक की पैरवी करे तो क़ुरआन उस की राहनुमाई करता है यहां तक कि जन्नत में पहुंचा देता है और जो क़ुरआन को छोड़ देता है क़ुरआन उस को नहीं छोड़ता बल्कि उस का पीछा करता है। यहां तक कि उसे जहन्नम में गिरा देता है। (حلیۃ الاولیاء، 4/87، رقم:4828)

❀ दुन्या में दो ही लोगों के लिये बेहतरी है : तौबा करने वाले के लिये और बुलन्दिये दरजात के वासिते़ अ़मल करने वाले के लिये।

(حلیۃ الاولیاء، 4/86، رقم:4823)

❀ ऐ नौ जवानो ! अपनी जवानी और चुस्ती में अपनी क़ुव्वतो ता़क़त को इ़ताअ़ते इलाही में सर्फ़ करो और ऐ बूढ़ो ! अब किस चीज़ का इन्तिज़ार है ? (حلیۃ الاولیاء، 4/90، رقم:4846)

❀ मुझे अपनी ज़िन्दगी में एक दिरहम सदक़ा करना इस से ज़ियादा पसन्द है कि मेरे मरने के बा'द कोई मेरी त़रफ़ से सो दिरहम सदक़ा करे।

(حلیۃ الاولیاء، 4/90، رقم:4847)

❀ जो तक़्दीर पर राज़ी नहीं उस की ह़माक़त का कोई इ़लाज नहीं।

(احیاء العلوم، 5/66)

फ़रामीने ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ दुन्या व आख़िरत की मिसाल दो सौकनों की सी है अगर एक को राज़ी किया जाए तो दूसरी नाराज़ हो जाती है। (حلیۃ الاولیاء، 4/53، رقم:4720)

❀ बद अख़्लाक़ इन्सान की मिसाल उस टूटे हुए घड़े (मटके) की त़रह़ है जो क़ाबिले इस्ति'माल नहीं रहता। (احیاءعلوم،3/64)

❀ जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपने क़दमों के नीचे रखा शैत़ान उस के साए से भी भागता है। (حلیۃ الاولیاء،4/63،رقم:4759)

❀ जो शख़्स अ़मले आख़िरत के बदले दुन्या त़लब करे **अल्लाह** पाक उस के दिल को उलट देता और उस का नाम जहन्नमियों के रजिस्टर में लिख देता है। (تنبیہ المغترین،ص23)

❀ मुसीबत मोमिन के लिये ऐसी है जैसे चौपाए के लिये पाउं की बेड़ी। (حلیۃ الاولیاء،4/59،رقم:4740)

❀ जो किसी मुसीबत में मुब्तला किया गया यक़ीनन वोह अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام के रास्ते पर चलाया गया। (حلیۃ الاولیاء،4/59،رقم:4741)

❀ मैं ने एक ह़वारी की किताब में पढ़ा : जब तुझे आज़्माइश में मुब्तला किया जाए या फ़रमाया : आज़्माइश वालों की राह पर चलाया जाए तो ख़ुद को ख़ुश नसीब समझ क्यूं कि यक़ीनन तुझे अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام और सालिह़ीन की राह पर चलाया गया है और जब तुझे नरमी व आसानी की राह पर चलाया जाए तो यक़ीनन तेरे लिये अम्बिया और सालिह़ीन के इ़लावा किसी दूसरे की राह मुन्तख़ब की गई है। (حلیۃ الاولیاء،4/59،رقم:4742)

❀ शैत़ान को औलादे आदम में ज़ियादा सोने और ज़ियादा खाने वाला सब से ज़ियादा पसन्द है। (حلیۃ الاولیاء،4/61،رقم:4752)

❀ जिस की बुर्दबारी उस की ख़्वाहिश पर ग़ालिब आ गई वोही ज़बर दस्त आ़लिम है। (حلیۃ الاولیاء،4/63،رقم:4759)

फ़रामीने ह़ज़रते शुमैत़ बिन अ़ज्लान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जो शख़्स मौत को हर वक़्त पेशे नज़र रखता है उसे दुन्या की तंगी व ख़ुशह़ाली की कोई परवा नहीं होती। (حلیۃ الاولیاء، 3/153، رقم:3517)

❀ ह़ज़रते उ़बैदुल्लाह बिन शुमैत़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते शुमैत़ बिन अ़ज्लान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** पाक ने मोमिन की क़ुव्वत उस के दिल में रखी है न कि उस के आ'ज़ा में, क्या तुम नहीं देखते कि एक बूढ़ा कमज़ोर शख़्स दिन में रोज़े रखता और रात में इ़बादत करता है जब कि कोई (मुनाफ़िक़) नौ जवान शख़्स इस से आ़जिज़ होता है। (حلیۃ الاولیاء، 3/153، رقم:3518)

❀ लोग तीन त़रह़ के हैं : ﴿1﴾ जो इब्तिदा ही से नेकी के कामों में मश्ग़ूल रहा और इस पर हमेशगी इख़्तियार की ह़त्ता कि दुन्या से रुख़्सत हो गया येह मुक़र्रबीन में से है ﴿2﴾ जिस की इब्तिदाई ज़िन्दगी तो गुनाहों और ग़फ़्लत में गुज़री लेकिन फिर वोह ताइब हो गया येह अहले यमीन (दाईं जानिब वालों या'नी जन्नतियों) में से है और ﴿3﴾ जो इब्तिदा ही से गुनाहों में मगन रहा और (बिग़ैर तौबा किये) दुन्या से चला गया येह अस्ह़ाबे शिमाल (बाईं जानिब वालों या'नी दोज़ख़ियों) में से है। (حلیۃ الاولیاء، 3/155، رقم:3529)

फ़रामीने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ खाना खिलाना और अच्छी गुफ़्तगू करना तुम्हें जन्नत में ले जाएगा। (موسوعہ لابن ابی الدنیا، 7/193، رقم:304)

❀ बच्चों से ज़ियादा मज़ाक़ न किया करो ! वरना उन के नज़्दीक तुम्हारी क़द्रो मन्ज़िलत कम हो जाएगी। (موسوعہ ابن ابی الدنیا، 7/238، رقم:393)

❀ बेशक मग़्फ़िरत को वाजिब करने वाली चीज़ों में से एक भूके मिस्कीन को खाना खिलाना है। (حلیۃ الاولیاء، 3/174، رقم:3600)

❀ हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा गया : कौन सा अ़मल आप को सब से ज़ियादा महबूब है ? फ़रमाया : बन्दए मोमिन को ख़ुश करना । पूछा : इस के इलावा कोई और बात जिस से आप को लज़्ज़त हासिल होती हो ? फ़रमाया : (मुसल्मान) भाइयों पर ख़र्च करना ।

(حلیۃ الاولیاء، 3/175، رقم:3602)

❀ **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : वोह लोग कहां हैं जो ख़ुद को और अपने कानों को लह्वो लइब और मज़ामीर से बचाते थे उन्हें जन्नती बाग़ों में दाख़िल करो । फिर फ़िरिश्तों से इर्शाद फ़रमाएगा : "इन्हें मेरी ह़म्दो सना सुनाओ और बताओ कि अब इन्हें न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।"

(حلیۃ الاولیاء، 3/176، رقم:3611)

फ़रामीने ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

❀ जो **अल्लाह** पाक से डरता है तो लोग न चाहते हुए भी उस से मह़ब्बत करते हैं ।

(حلیۃ الاولیاء، 3/258، رقم:3881)

❀ जो शख़्स **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त कर के ता'ज़ीम बजा लाए तो **अल्लाह** पाक अपनी जन्नत के साथ उसे इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता है और जो शख़्स ना फ़रमानी छोड़ कर **अल्लाह** पाक की ता'ज़ीम बजा लाए तो **अल्लाह** पाक उसे इस त़रह़ इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता है कि उसे जहन्नम में दाख़िल नहीं करता । मज़ीद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक से मदद मांगो वोह तुम्हें अपने सिवा हर एक से बे परवा कर देगा, न तो तुम से बढ़ कर कोई **अल्लाह** पाक का नियाज़ मन्द हो और न ही तुम से बढ़ कर कोई उस का मोह़ताज हो ।

(حلیۃ الاولیاء، 3/257، رقم:3877)

फ़रामीने ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जिस ने **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये इल्म ह़ासिल किया **अल्लाह** पाक उस को इतना अ़त़ा फ़रमाएगा जो उस को किफ़ायत करेगा।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 8/279)

❀ ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ख़्वाहिशात और अपनी राय की पैरवी करने वालों की बातों और कामों में ज़र्रा बराबर भलाई नहीं देखी।

(حلیۃ الاولیاء، 4/247، رقم:5417)

❀ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पसन्द करते थे कि अ़मल में इज़ाफ़ा ही करें कोई कमी न करें ताकि इस्तिक़ामत बाक़ी रहे। (حلیۃ الاولیاء، 4/255، رقم:5466)

❀ जब सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان किसी जनाज़े में ह़ाज़िर होते तो चन्द दिनों तक ग़मज़दा रहते और येह ग़म उन में वाज़ेह़ त़ौर पर देखा जाता।

(حلیۃ الاولیاء، 4/253، رقم:5459)

❀ जब हम किसी जनाज़े में जाते या किसी मय्यित के बारे में सुनते तो हम चन्द दिन तक उस के ग़म में मुब्तला रहते क्यूं कि हम जानते हैं कि उसे वोह मुआ़मला दरपेश हुवा है जो उसे जन्नत की त़रफ़ ले जाएगा या फिर दोज़ख़ की त़रफ़ जब कि तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम अपने जनाज़ों में दुन्या की बातें करते हो। (حلیۃ الاولیاء، 4/254، رقم:5460)

❀ अगर बन्दा अपने गुनाहों की त़रह़ अपनी इबादत को छुपाए तो **अल्लाह** पाक उस की इबादत को ज़ाहिर फ़रमा देगा। (حلیۃ الاولیاء، 4/254، رقم:5461)

फ़रामीने ह़ज़रते सुफ़्यान बिन सईद सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जो नेक काम में ह़राम माल ख़र्च करता है वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो पेशाब से कपड़े को पाक करता है, कपड़ा पानी से ही पाक होता है और गुनाहों को सिर्फ़ ह़लाल ही मिटाता है। (کتاب الکبائر، ص135)

❀ जब तक ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत न हो इबादत की ताक़त और इबादत पर मज़बूती किसी को हासिल नहीं हो सकती। (حلیۃ الاولیاء، 6/400، رقم:9094)

❀ इल्म इस लिये हासिल किया जाता है ताकि उस के ज़रीए **अल्लाह** पाक का डर व ख़ौफ़ और तक़्वा हासिल हो इसी वज्ह से इल्म को फ़ज़ीलत दी गई है अगर ऐसा न होता तो वोह भी बक़िय्या तमाम चीज़ों की तरह कोई अहम्मिय्यत न रखता। (حلیۃ الاولیاء، 6/400، رقم:9095)

फ़रामीने हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ इल्म का पहला दरजा ग़ौर से सुनना फिर ख़ामोशी इख़्तियार करना फिर उसे याद रखना फिर उस पर अमल करना और फिर उसे फैलाना है। (حلیۃ الاولیاء، 7/324، رقم:10694)

❀ जब कोई आलिम ''لَاۤ اَدْرِیْ'' (या'नी मैं नहीं जानता) कहना छोड़ देता है तो हलाकतों में पड़ जाता है। (حلیۃ الاولیاء، 7/324، رقم:10696)

❀ ग़ीबत क़र्ज़ से ज़ियादा सख़्त है, क़र्ज़ तो लौटा दिया जाता है लेकिन ग़ीबत लौटाई नहीं जा सकती। (حلیۃ الاولیاء، 7/324، رقم:10700)

❀ वोह जगह बद तरीन है जहां बन्दा गुनाह करता रहे और तौबा किये बिग़ैर वहां से चला जाए। (حلیۃ الاولیاء، 7/328، رقم:10717)

❀ हिक्मत तीन चीज़ों से आती है : ﴿1﴾ ख़ामोश रहने ﴿2﴾ ग़ौर से सुनने और ﴿3﴾ महफ़ूज़ रखने से और तीन ख़स्लतों की वज्ह से हिक्मत का फल मिलता है : ﴿1﴾ हमेशा के घर (जन्नत) की तरफ़ रुजूअ़ करने ﴿2﴾ धोके के घर (दुन्या) से दूर होने और ﴿3﴾ मौत से पहले मौत की तय्यारी करने से। (حلیۃ الاولیاء، 7/330، رقم:10729)

❀ अस्हाबे हिक्मत के साथ बैठा करो क्यूं कि उन की मजलिस ग़नीमत, उन की सोहबत सलामती और उन की दोस्ती इ़ज़्ज़त है। (حلیۃ الاولیاء، 7/334، رقم:10744)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ जिस ने उ़लमा को ह़क़ीर समझा उस की आख़िरत को नुक़्सान होगा। (تاریخ الاسلام للذہبی، 12/232)

❀ जहां बोलना न हो वहां ख़ामोश रहना आदमी के लिये ज़बर दस्त ज़ीनत है। (حسن السمت فی الصمت، ص108)

❀ सच बोलना मेरे नज़्दीक क़सम खाने से ज़ियादा अच्छा है। (حلیۃ الاولیاء، 8/180، رقم:11810)

❀ ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, ख़ूब भलाई करने और किसी को तक्लीफ़ न देने का नाम हुस्ने अख़्लाक़ है। (ترمذی، 3/404، حدیث:2012)

फ़रामीने ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ अपने मुसल्मान भाइयों की ग़लतियों को मुआ़फ़ करना बहादुरी है। (احیاء العلوم، 2/221)

❀ ग़ौरो फ़िक्र एक ऐसा आईना है जो तुझे तेरी नेकियां और बुराइयां दिखाता है। (احیاء العلوم، 5/162)

❀ **अल्लाह** पाक की मह़ब्बत का मत़लब येह है कि इस्तिक़ामत के साथ उस की इत़ाअ़त की जाए, जिन कामों के करने का उस ने हुक्म दिया उन्हें करने और जिन से बचने का हुक्म दिया उन से बचने को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया जाए। (عمدۃ القاری، 1/228)

❀ अगर तू तक़्दीरे इलाही पर सब्र नहीं कर सकता तो अपने नफ़्स की तक़्दीर पर भी सब्र नहीं कर सकेगा। (احیاء العلوم، 5/66)

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ ऐ मेरे भाइयो! मैं तुम्हारे लिये तीन चीज़ें पसन्द करता हूं: ﴿1﴾ क़ुरआने

पाक कि दिन रात इस की तिलावत करते रहो ﴾2﴿ मुसल्मानों की जमाअ़त को लाज़िम पकड़ो और ﴾3﴿ मुसल्मानों की इ़ज़्ज़तों के दरपै होने से बचो। (حلیۃ الاولیاء، 3/47، رقم:3116)

❀ **अल्लाह** पाक ने जिस को अच्छी सूरत, अच्छा रिज़्क़ और नेक मन्सब दिया हो फिर वोह **अल्लाह** पाक के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करे तो वोह ख़ालिस **अल्लाह** वालों में से है। (حلیۃ الاولیاء، 4/278، رقم:5567)

❀ कितने ही ऐसे हैं जिन्हों ने दिन का इस्तिक़्बाल किया मगर उस को मुकम्मल न कर सके और कितने ही ऐसे हैं जिन्हों ने आने वाले दिन का इन्तिज़ार किया मगर उस को पा न सके, अगर तुम मौत और उस की मसाफ़त पर ग़ौर करो तो ज़रूर ख़्वाहिशात और उस के धोकों से नफ़रत करोगे। (حلیۃ الاولیاء، 4/271، رقم:5535)

❀ तौबा करने वालों के दिल उस शीशे की मानिन्द होते हैं जिस में हर शै नज़र आती है, उन के दिल नसीह़त को जल्दी क़बूल करते हैं और वोह नरमी के ज़ियादा क़रीब होते हैं। (حلیۃ الاولیاء، 4/279، رقم:5571)

फ़रामीने ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ नेकों से मह़ब्बत रखना, उन के पास बैठना, उन की सोह़बत में रहना, उन के अफ़्आ़ल व अक़्वाल देख कर अ़मल करना, इन्सानी क़ल्ब (दिल) के लिये इस से ज़ियादा कोई बात नाफ़ेअ़ (नफ़्अ बख़्श) नहीं।

(تنبیہ المغترین، ص41 مفہوما)

❀ मुझे उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जिसे मा'लूम है कि उस के आगे सजी हुई जन्नत और पीछे भड़क्ती हुई जहन्नम है फिर भी उसे नींद आ जाए।

(احیاء العلوم، 5/146)

फ़रामीने मुहम्मद बिन हनफ़िय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जो हुस्ने मुआ़शरत से काम न ले वोह अ़क़्ल मन्द व दाना नहीं और जो मुआ़शरत में कोई चारए कार न पाए वोह इन्तिज़ार करे यहां तक कि **अल्लाह** पाक उस के लिये कुशादगी और उस से निकलने की राह पैदा फ़रमा दे। (حلیۃ الاولیاء، 3/205، رقم:3712)

❀ बेशक **अल्लाह** पाक ने जन्नत को तुम्हारे नफ़्सों की क़ीमत क़रार दिया है, लिहाज़ा उसे उस के ग़ैर के बदले में न बेचो। (حلیۃ الاولیاء، 3/207، رقم:3718)

फ़रामीने ह़ज़रते यह़या बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जब अच्छी बात सुनो उसे लिख लिया करो, जब लिख लो तो उसे याद कर लिया करो और जब याद कर लो तो बयान कर दिया करो।

(وفیات الاعیان، 5/184، رقم:806)

❀ दुन्या आने जाने वाली चीज़ है और माल आ़रिज़ी है, हम से पहले लोग हमारे लिये नमूना हैं और हम अपने बा'द वालों के लिये इ़ब्रत हैं।

(وفیات الاعیان، 5/184، رقم:806)

फ़रामीने मुहम्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस में तीन ख़स्लतें पैदा फ़रमा देता है : ﴿1﴾ दीन की समझ बूझ ﴿2﴾ दुन्या से बे रग़बती और ﴿3﴾ अपने उ़यूब की मा'रिफ़त। (حلیۃ الاولیاء، 3/247، رقم:3841)

❀ दुन्या फ़ना का घर और गुज़ारे का मक़ाम है। नेक व ख़ुश बख़्त लोगों ने इस से ए'राज़ किया जब कि बद बख़्त लोगों के हाथों से येह तेज़ी से निकल भागी। इस के पीछे पड़ा रहने वाला बद बख़्त जब कि इस से कनारा कशी इख़्तियार करने वाला ख़ुश बख़्त है। येह अपने फ़रमां बरदारों को तक्लीफ़ में डालने वाली, पैरौकारों को हलाक करने वाली और अपने

सामने झुकने वालों से ख़ियानत करने वाली है। फ़क़्र इस की मालदारी और ज़ियादती इस का नुक़्सान है और इस के अय्याम बदलते रहते हैं।

(حلیۃ الاولیاء، 3/247، رقم:3842ملتقطا)

❀ ज़मीन एक शख़्स के हक़ में रोती और एक शख़्स के ख़िलाफ़ रोती है। जिस के लिये रोती है येह वोह ख़ुश नसीब है जो इस की पीठ पर **अल्लाह** पाक की इताअ़त बजा लाता है और जिस के ख़िलाफ़ रोती है येह वोह बद नसीब है जिस ने **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के सबब ज़मीन को बोझल कर दिया है। (حلیۃ الاولیاء، 3/247، رقم:3843)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू या'क़ूब फ़रक़द सबख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ पेट वाले के लिये पेट की वज्ह से हलाकत है कि अगर उसे न भरे तो कमज़ोर पड़ जाता है और अगर भरे तो बोझल हो जाता है।

(موسوعہ ابن ابی الدنیا، 4/117، رقم:224)

❀ कोई बन्दा सात साल तक ख़ुद को किसी गुनाह से बचाता रहे तो उस के बा'द वोह उस गुनाह का इरतिकाब नहीं करता। (حلیۃ الاولیاء، 3/53، رقم:3140)

❀ ऐ लोगो! दुन्या को दाया और आख़िरत को मां बना लो, क्या तुम उस बच्चे को नहीं देखते जो ख़ुद को दाया के ह़वाले कर देता है लेकिन जब बड़ा होता और अपनी वालिदा को पहचानने लगता है तो दाया को छोड़ कर ख़ुद को मां के ह़वाले कर देता है, बेशक आख़िरत भी तुम्हारी मां की त़रह़ है और क़रीब है कि वोह तुम्हें अपनी त़रफ़ खींच ले। (حلیۃ الاولیاء، 3/53، رقم:3136)

❀ आप फ़रमाते हैं कि मैं ने तौरात शरीफ़ में पढ़ा है कि जिस ने दुन्या पर ग़मगीन ह़ालत में सुब्ह़ की तो उस ने अपने रब पर नाराज़ी की ह़ालत में सुब्ह़ की, जो किसी मालदार के पास बैठा और उस के लिये आ़जिज़ी की तो उस का दो तिहाई दीन चला गया और जिस ने मुसीबत पहुंचने पर लोगों

के सामने उस की शिकायत की तो गोया उस ने **अल्लाह** पाक की शिकायत की। (حلیۃ الاولیاء، 3/53، رقم:3137)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ जब तुम येह देखो कि तुम्हारा परवर्दगार तुम्हें पै दर पै ने'मतें अ़त़ा फ़रमा रहा है और तुम उस की ना फ़रमानी किये जा रहे हो तो तुम्हें उस से डरना चाहिये। (تاریخ ابن عساکر، 22/64، رقم:2613)

❀ जिस त़रह़ पूरी कोशिश से तुम अपने गुनाह को छुपाते हो उसी त़रह़ अपनी नेकियां भी छुपाने की कोशिश करो। (تاریخ ابن عساکر، 22/68، رقم:2613)

❀ दुन्या में जो ज़िन्दगी गुज़र चुकी है वोह ख़्वाब की त़रह़ है और जो बाक़ी है वोह तमन्नाएं हैं। (الثقات لابن حبان، 3/250، رقم:569)

❀ दुन्या में जो चीज़ भी तुझे ख़ुश करती है उस के साथ तुझे ग़मज़दा करने वाली चीज़ ज़रूर होती है। (حلیۃ الاولیاء، 3/276، رقم:3943)

❀ बेशक आख़िरत का साज़ो सामान (दुन्यवी ज़िन्दगी में) बहुत सस्ता है, लिहाज़ा इस सस्ते ज़माने में इसे ज़ियादा से ज़ियादा इकठ्ठा कर लो क्यूं कि जब इस के ख़र्च का दिन आएगा तो फिर येह न थोड़ा ह़ासिल हो सकेगा न ज़ियादा। (تاریخ ابن عساکر، 22/53، رقم:2613)

फ़रामीने ह़ज़रते यह़या बिन अबू कसीर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ नेकियां याद रखना और गुनाहों को भूल जाना बहुत बड़ा धोका है। (حلیۃ الاولیاء، 3/80، رقم:3244)

❀ इल्म जिस्मानी राह़तो आराम के साथ ह़ासिल नहीं होता। (تاریخ بغداد، 10/142، رقم:5279)

❀ तुम्हें किसी शख़्स की बुर्दबारी तअ़ज्जुब में न डाले ह़त्ता कि उसे ग़ुस्से की ह़ालत में देख लो और किसी की अमानत दारी भी तुम्हें तअ़ज्जुब में

न डाले ह़त्ता कि उस की त़मअ़ व लालच का मुशाहदा कर लो क्यूं कि तुम्हें मा'लूम नहीं कि वोह किस करवट बैठेगा। (حلیۃ الاولیاء، 3/81، رقم:3251)

❀ इ़ल्म की मीरास सोने की मीरास से बेहतर है और नेक सीरत होना मोतियों से बेहतर है। (حلیۃ الاولیاء، 3/78، رقم:3233)

❀ तीन चीज़ें जिस घर में होती हैं उस से बरकत उठा ली जाती है : ﴿1﴾ फ़ुज़ूल ख़र्ची ﴿2﴾ ज़िना और ﴿3﴾ ख़ियानत। (حلیۃ الاولیاء، 3/81، رقم:3252)

फ़रामीने ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ किसी ने पूछा : आदमी को किस त़रह़ मा'लूम हो कि वोह मुख़्लिस है ? फ़रमाया : जब वोह नेक काम करने में पूरी कोशिश करने के बा वुजूद इस बात को पसन्द करे कि मैं मुअ़ज़्ज़ज़ (या'नी इ़ज़्ज़त वाला) न समझा जाऊं। (تنبیہ المغترین، ص23)

❀ (आप से पूछा गया : लोगों में सब से ज़ियादा ग़मज़दा शख़्स कौन है ? फ़रमाया :) जो सब से ज़ियादा बद अख़्लाक़ है। (رسالہ قشیریہ، ص276)

❀ दिल में हैबत का वुजूद और बारगाहे इलाही में अपनी गुज़श्ता बद आ'मालियों से घबराहट तुम्हारी "ह़या" का पता देते हैं। (رسالہ قشیریہ، ص249)

❀ "ह़या" ख़ामोशी का सबक़ देती है और "ख़ौफ़" परेशान रखता है। (تاریخ ابن عساکر، 17/430)

❀ ऐसे शख़्स के हम नशीन बनो जिस के औसाफ़ तुम से बातें करें और उस के पास मत बैठो जिस की ज़बान तुम से बातें करे। (قوت القلوب، 1/324)

फ़रामीने ह़ज़रते अबू बक्र शिबली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

❀ बुरे लोगों की सोह़बत की नुहूसत से नेक बन्दों के बारे में बद गुमानी पैदा होती है। (الکواکب الدریۃ، 2/86)

❀ शुक्र येह है कि नज़र ने'मत अ़ता करने वाले पर हो न कि ने'मत पर। (احیاء العلوم، 4/103)

❀ जो **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से रह़मतो अ़ता देख कर उस से मह़ब्बत करे वोह मह़ब्बत में मुख़्लिस नहीं। (حلیۃ الاولیاء، 10/395، رقم:15591)

फ़रामीने ह़ज़रते बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ

❀ मैं ने अपने दिल, ज़बान और नफ़्स की इस्लाह़ के लिये दस दस साल गुज़ारे, उन में मुझे सब से ज़ियादा मुश्किल दिल की इस्लाह़ मा'लूम हुई। (منہاج العابدین، ص98)

❀ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ज़ौजा बयान करती हैं कि मैं ने आप को फ़रमाते सुना : मैं ने हर शै का इ़लाज किया लेकिन नफ़्स के इ़लाज से मुश्किल कोई इ़लाज न पाया ह़ालां कि येह नफ़्स मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा ह़क़ीर है। (حلیۃ الاولیاء، 10/37، رقم:14426)

❀ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया : बुज़ुर्गों ने मा'रिफ़त कैसे ह़ासिल की ? फ़रमाया : उन्हों ने अपने ह़ुक़ूक़ छोड़ दिये और ख़ुदा के फ़राइज़ में लग गए। (حلیۃ الاولیاء، 10/39، رقم:14441)

❀ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया : आ़रिफ़ की निशानी क्या है ? फ़रमाया : यादे इलाही में सुस्ती न करे, ह़क़्क़े बन्दगी अदा करने से न उक्ताए और ख़ुदा के सिवा किसी से दिल न लगाए। (حلیۃ الاولیاء، 10/39، رقم:14443)

❀ भूक बादल है, बन्दा भूका होता है तो दिल पर दानाई और ह़िक्मत की बारिश होती है। (حلیۃ الاولیاء، 10/40، رقم:14448)

❀ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : जब तुम किसी ऐसे शख़्स को देखो जिसे करामात अ़ता की गई हों ह़त्ता कि वोह हवा में उड़ता हो तो उस से धोका न खाना यहां तक कि देख लो वोह नेकी का ह़ुक्म देने, बुराई से मन्अ़ करने,

अल्लाह पाक की हुदूद की हिफ़ाज़त करने और शरीअ़त की बजा आवरी में कैसा है। (حلیۃ الاولیاء، 10/41، رقم:14453)

फ़रामीने ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ **अल्लाह** पाक उस बन्दे का दिल नहीं खोलता जिस में तीन चीज़ें हों : ﴿1﴾ बाक़ी रहने की चाहत ﴿2﴾ माल की महब्बत और ﴿3﴾ कल का ग़म। (حلیۃ الاولیاء، 10/201، رقم:14920)

❀ लोगों की बुरी और घटिया आ़दतों की तफ़्तीश न करो बल्कि अपने बारे में इस्लामी अख़्लाक़ की तफ़्तीश और छानबीन करो यहां तक कि तुम फ़रमां बरदार हो जाओ और तुम्हारे दिल में और तुम्हारे नज़्दीक तुम्हारे ह़ाल की क़द्र बढ़ जाए। (حلیۃ الاولیاء، 10/202، رقم:14923)

❀ इ़ल्म के सिवा सारी दुन्या जहालत, इख़्लास के बिग़ैर सारा अ़मल ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे हैं और इख़्लास वाले अ़मल में भी तुम डरते रहो यहां तक कि तुम्हें पता लग जाए कि अ़मल क़बूल हुवा या नहीं। (حلیۃ الاولیاء، 10/203، رقم:14926 ملتقطا)

❀ इ़ल्म का शुक्र अ़मल है और अ़मल का शुक्र इ़ल्म की ज़ियादती है। (حلیۃ الاولیاء، 10/203، رقم:14927)

❀ पेट भरना ग़फ़्लत की अस्ल है। (حلیۃ الاولیاء، 10/203، رقم:14931)

❀ आदमी गुनाह पर डटा रहता है तो उस की तमाम नेकियों में नफ़्सानी ख़्वाहिश की आमेज़िश रहती हैं और जब तक वोह एक गुनाह पर भी डटा हुवा है उस की नेकियां ख़ालिस नहीं हो सकतीं। नीज़ वोह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से ख़लासी नहीं पा सकता जब तक वोह अपने नफ़्स की उन तमाम चीज़ों से निकल न जाए जिन को वोह पहचानता है कि येह **अल्लाह** पाक को ना पसन्द हैं। (حلیۃ الاولیاء، 10/204، رقم:14932)

❀ उस इल्म से अफ़्ज़ल किसी को कोई चीज़ अ़ता नहीं की गई जिस की वज्ह से (बन्दे की) **अल्लाह** पाक की त़रफ़ मोह़ताजी बढ़े।

(حلیۃ الاولیاء، 10/204، رقم:14934)

❀ बन्दों के लिये चार चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर लिया है : ﴿1﴾ जो **अल्लाह** पाक से डरेगा **अल्लाह** पाक उसे अमान देगा ﴿2﴾ जो उस से उम्मीद रखेगा वोह अपनी उम्मीद को पहुंचेगा। ﴿3﴾ जो नेकियों के ज़रीए उस का क़ुर्ब ह़ासिल करेगा वोह उस की नेकियां क़बूल करेगा और एक के बदले 10 का सवाब अ़ता करेगा। ﴿4﴾ जो उस पर तवक्कुल करेगा वोह उस का तवक्कुल क़बूल फ़रमाएगा, उसे नफ़्स के सिपुर्द नहीं करेगा और उस के मुआ़मले की ज़िम्मेदारी ख़ुद लेगा।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया : वोह कौन सा अ़मल है जिसे आदमी करता रहे यहां तक कि अपने नफ़्स के ऐ़बों को जान ले ? फ़रमाया : आदमी अपने नफ़्स के ऐ़ब उस वक़्त तक नहीं जान सकता जब तक अपने तमाम अह़वाल में नफ़्स का मुह़ासबा न करे। अ़र्ज़ की गई : वोह कौन सा मर्तबा है जिस पर फ़ाइज़ होने वाला मक़ामे उ़बूदिय्यत पर फ़ाइज़ होता है ? फ़रमाया : जब तदबीर छोड़ दे। अ़र्ज़ की गई : वोह कौन सा मर्तबा है जिस पर फ़ाइज़ होने वाला मक़ामे सिद्क़ पर फ़ाइज़ होता है ? फ़रमाया : जब **अल्लाह** पाक के हुक्म और मन्अ़ करने के मुआ़मले में उस पर तवक्कुल करे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/205، رقم:14941)

❀ उम्मीद हर गुनाह की ज़मीन, ह़िर्स हर गुनाह का बीज और टाल मटोल हर गुनाह का पानी है। नदामत हर इत़ाअ़त की ज़मीन, यक़ीन हर इत़ाअ़त का बीज और अ़मल हर इत़ाअ़त का पानी है। जितना तुम अपनी दुन्या को गिराओगे उतना तुम अपनी आख़िरत बनाओगे। जितना तुम अपने नफ़्स,

नफ़्सानी ख़्वाहिश और अपनी शह्वत की मुख़ालफ़त करोगे उतना तुम अपने मौला को राज़ी करोगे। जितना तुम अपने दुश्मन शैतान और उस की दुश्मनी को जानोगे उतना तुम अपने रब को पहचानोगे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/205، رقم:14945)

❀ जो बुरा गुमान रखता है वोह यक़ीन से मह़रूम होता है, जो बे फ़ाएदा गुफ़्त्गू करता है वोह सिद्क़ से मह़रूम होता है और जो फ़ुज़ूल कामों में मश्ग़ूल होता है वोह परहेज़ गारी से मह़रूम होता है और जो इन तीनों चीज़ों से मह़रूम होता है वोह हलाकत में पड़ता है और उसे दुश्मनों वाले रजिस्टर में लिख दिया जाता है। (حلیۃ الاولیاء، 10/205، رقم:14946)

❀ "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कहने का सवाब **अल्लाह** पाक का दीदार ही है और जन्नत तो आ'माल का सवाब है। (حلیۃ الاولیاء، 10/214، رقم:15012)

❀ ह़ज़रते अह़मद बिन मुह़म्मद बिन सालिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि एक शख़्स ने आ कर अ़र्ज़ की : ऐ उस्ताद ! अस्ल ग़िज़ा क्या है ? फ़रमाया : हमेशा ज़िक्र करना। उस शख़्स ने कहा : मैं इस बारे में नहीं पूछ रहा बल्कि मैं तो इन्सानी जान के क़ाइम रखने वाली शै के बारे में पूछ रहा हूं। आप ने फ़रमाया : ऐ बन्दे ! चीज़ें **अल्लाह** पाक ही के सबब क़ाइम हैं। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : मेरी मुराद येह नहीं बल्कि मैं तो उस के बारे में पूछ रहा हूं जिस के बिग़ैर चारा नहीं। आप ने फ़रमाया : ऐ जवान ! **अल्लाह** पाक के बिग़ैर भी कोई चारा नहीं। (حلیۃ الاولیاء، 10/218، رقم:15022)

फ़रामीने ह़ज़रते दाता अ़ली हज्वेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

❀ आग पर क़दम रखना तो नफ़्स गवारा कर सकता है लेकिन इ़ल्म पर अ़मल इस से कई गुना दुश्वार है। (फ़ैज़ाने दाता अ़ली हज्वेरी, स. 70)

❀ जिस क़िस्म के लोगों की सोह़बत इख़्तियार की जाए नफ़्स उन्ही की ख़स्लतो आ़दत इख़्तियार कर लेता है। (کشف المحجوب، ص375)

❀ अ़मल की रूह़ इख़्लास है, जिस त़रह़ जिस्म रूह़ के बिग़ैर मह़ूज़ पथ्थर है इसी त़रह़ अ़मल बिग़ैर इख़्लास के मह़ूज़ ग़ुबार है। (کشف المحجوب، ص95)

फ़ेहरिस

फ़रामीने ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....1
फ़रामीने ह़ज़रते मैमून बिन मेह्रान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....1
फ़रामीने ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....2
फ़रामीने ह़ज़रते शुमैत़ बिन अ़ज्लान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....4
फ़रामीने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....4
फ़रामीने ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....5
फ़रामीने ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....6
फ़रामीने ह़ज़रते सुफ़्यान बिन सईद सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....6
फ़रामीने ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....7
फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....8
फ़रामीने ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....8
फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....8
फ़रामीने ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....9
फ़रामीने मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....10
फ़रामीने ह़ज़रते यह़्या बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....10
फ़रामीने मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....10
फ़रामीने ह़ज़रते अबू या'क़ूब फ़रक़द सबख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....11
फ़रामीने ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه..12
फ़रामीने ह़ज़रते यह़्या बिन अबू कसीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....12
फ़रामीने ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه..13
फ़रामीने ह़ज़रते अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.13
फ़रामीने ह़ज़रते बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....14
फ़रामीने ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....15
फ़रामीने ह़ज़रते दाता अ़ली हज्वेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه.....17

www.dawateislami.net

नसीहत की बात

एक बुज़ुर्ग رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया : तुम्हारे रिज़्क़ तुम्हें फ़राइज़ो वाजिबात से ग़ाफ़िल न कर दे, इस तरह तुम अपनी आख़िरत बरबाद कर दोगे हालां कि रिज़्क़ उतना ही मिलेगा जितना **अल्लाह** पाक ने लिख दिया है। (احیاء العلوم، 4/302)